संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधयः

- Sk Katariya
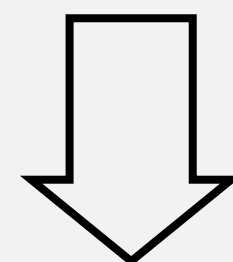
SKY EDUCARE

- **भाषा** एक ऐसी व्यवस्था जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं, और दूसरों के विचार एवं अभिप्रायों को हम स्वयं समझने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

(1) 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।

(3) स्वीट के अनुसार : ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधयः

- भाषा शिक्षण उद्देश्य - *ग्रहण और अभिव्यक्ति*
- संस्कृतभाषाशिक्षण उद्देश्य -
  - *भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्रचार एवं संरक्षण करना।*
  - *भारतीय संस्कृति का ज्ञान करके एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण करना।*
  - *राष्ट्र के प्रति, संस्कृति के प्रति समादर व भावात्मक एकता का विकास करना ।*
  - *विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।*
  - *संस्कृत बोधपूर्वक **सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने** की क्षमता का विकास करना।*
  - *संस्कृत भाषा व साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।*

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधयः

शिक्षण - कक्षा में पाठ्यक्रम को लेकर शिक्षक व छात्र के बीच होने वाली सुव्यवस्थित अंतः क्रिया **'शिक्षण'** कहलाती है ।

शिक्षण-विधि - **शिक्षण कार्य को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करना** ही शिक्षण विधि कहलाता है। शिक्षण को सम्यक ढंग से चलाने के लिये शिक्षणविधि अत्यन्त आवश्यक है।

I. संस्कृतभाषा-शिक्षण-विधयः

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

- परंपरागत / प्राचीन
- नवीन /आधुनिक
- नवीनतम उपागम

Sky Educare
www.skyeducare.com
I. संस्कृतशिक्षणविधय:
परंपरागत / प्राचीन
नवीन /आधुनिक
नवीनतम उपागम
1. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा
2. व्याकरणानुवाद विधि
भंडारकरविधि
1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि या निर्बाधविधि या सुगमविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि या समन्वयविधि
7. मूल्यांकन विधि

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन	नवीन /आधुनिक	नवीनतम उपागम

1. सूक्ष्म शिक्षण
2. आगमन उपागम
3. समस्या समाधान
4. प्रयोजन विधि
5. दल शिक्षण
6. पर्यवेक्षण अध्ययन विधि
7. कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण प्रतिमान
8. अभिक्रमित अनुदेशन
9. सग्रंथन उपागम
10. निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण

I. संस्कृतशिक्षणविधयः

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि

- यह प्राचीनतमविधि है ।
- मुख्योद्देश्य (चतुष्टय पुरुषार्थ)धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति।
- इसे गुरुकुलपद्धति, व्याकरणपद्धति, प्राचीनपद्धति, पंडितपद्धति, पाठशालाविधि आदि नाम से भी जाना जाता है ।
- उपनयन संस्कार से विद्यारंभ, शिष्य के लिए छात्र शब्द का प्रयोग।

2. व्याकरणानुवाद विधि

→ भंडारकरविधि

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि

- गुरु शिष्य संबंध पिता पुत्र के समान।
- संस्कृत-शास्त्रों अध्ययन, आदर्श पंडित निर्माण, उच्चारण सामर्थ्य संपादन, स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पादन, आत्मानुशासन, तर्कशक्ति आदि गुणों का विकास।

2. व्याकरणानुवाद विधि

→ भंडारकरविधि

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

Sky Educare

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

2. व्याकरणानुवाद विधि

→ भंडारकरविधि

1. पाठशाला विधि।

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- वैदिक **शिक्षा मौखिक** होती थी। **वेद मंत्रोच्चार का बार बार मौखिक उच्चारण** करके कंठस्थीकरण होता था।
- छात्रों द्वारा किए गए **उच्चारण संबंधी दोषों** को शिक्षक व्यक्तिगत रूप से दूर करता था।
- प्रतिदिन नवीन पाठ प्रारंभ करने से पूर्व **गत पाठ का मूल्यांकन** किया जाता था और अब तक पढ़े गए पाठों के **मुख्य बिंदु की आवृत्ति** के बाद ही उन्हें आगे बढ़ाया जाता था।
- **कंठस्थीकरण** पर अधिक बल था।
- **लाभ** : छात्रों का उच्चारण शुद्ध होता था व मौखिक अभिव्यक्ति सशक्त होती थी।

I. पाठशाला विधि /

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।
- **उद्देश्य** **"गागर में सागर" (घटे समुद्रपूरणम्)भरना था।**
- संस्कृत व्याकरण व दर्शन शिक्षण की प्राचीनतम विधि है।
- इसके द्वारा नियमों को **सूत्ररूप** में कंठस्थीकरण किया जाता था।
- **लाभ** : जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।

1. पाठशाला विधि /

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- Sk Katariya

Sky Educare

- **कंठस्थीकरण** पर बल देते हुए वैदिक मंत्रों की बार-बार आवृत्ति करके उन्हें कंठस्थ करवाया जाता था।
- वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ को **परायण कहते** थे, ऐसा करने वाले को "**पारायनिक**" कहा जाता था।

- **लाभ :** इसमें प्राप्त ज्ञान को स्मृति में संचित करने पर बल दिया जाता था।

- Sk Katariya

Sky Educare

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- **वाद-विवाद - किसी विषय पर चर्चा की एक औपचारिक विधि है।** वाद-विवाद में दो परस्पर विपरीत विचारों के समर्थक अपना-अपना तर्क रखते हैं और दूसरे के कथनों का खंडन करने का प्रयत्न करते हैं।
- **शास्त्रार्थ तथा संवाद इसी के उदाहरण हैं।**
- **लाभ :** तर्कशक्ति विकास और भाव प्रकाशन की शक्ति का विकास ।

- Sk Katariya

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- **छात्रों की शंकाओं का समाधान करने** के लिए गुरु व्याख्या विधि अनुसरण करते थे। व्याख्यान के 6 अंगो को श्लोकबद्ध किया गया है :

पदच्छेदः पदार्थोक्तिः विग्रहो वाक्ययोजना।
आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ॥

- **लाभ :**
  - **विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती थी।**
  - **मानशिक किर्याशीलता का विकास होता था।**
  - **भाषा पर अधिकार होता था।**

1. पाठशाला विधि।

गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- प्रश्नों के माध्यम से व्याख्यान होता था, प्रत्येक प्रश्न के पश्चात छात्र उनकी आवृत्ति करते थे, इस प्रकार संपूर्ण व्याख्यान समाप्त होता था ।

- **लाभ** : जिज्ञासु छात्र सक्रिय होते थे

  तर्क व निरीक्षण शक्ति का विकास होता था।

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- विषय वस्तु को रुचिकर बनाने के लिए उस समय बीच-बीच में कथाएं सुनाई जाती थी जैसे हितोपदेश पंचतंत्र आदि की।
- **लाभ :**

  अध्ययन को रुचिकर बनाने व सरल बनाने में सहायक।

I. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- गुरु के अनुपस्थिति की स्थिति में मेधावी छात्र गुरुकुल के अन्य छात्रों को पढ़ाते थे।
- **लाभ :**

  शिक्षण करवाने वाले छात्रों में आत्मविश्वास आता था।

  मेधावी छात्रों को शिक्षक प्रशिक्षण मिल जाता था।

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- कई बार गुरु विषय को स्पष्ट करने के लिए लंबे लंबे भाषण व व्याख्यान देते थे कथा आदि का सहारा लेते थे
- **लाभ :**

इससे छात्रों को किसी विषय पर विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जाती थी।

1. पाठशाला विधि / गुरुकुलपरंपरा

1. मौखिक एवं व्यक्तिगतविधि
2. सूत्रविधि
3. परायणविधि
4. वाद-विवाद विधि
5. व्याख्याविधि
6. प्रश्नोत्तरविधि
7. कथाकथनविधि
8. कक्षानायकविधि
9. भाषणविधि
10. व्याकरणविधि

- व्याकरण भाषा का प्राण तत्व है भाषा के नियम व्याकरण में है होते इसलिए भाषा को पढ़ने के लिए व्याकरण का ज्ञान दिया जाना आवश्यक था। वेदों के अध्ययन के समय पुराने समय में व्याकरण का विशेष पठन-पाठन होता था।
- **लाभ :**

भाषा का शुद्ध परिष्कृत व परिमार्जित ज्ञान प्राप्त हो जाता।

1. पाठशाला विधि।

गुरुकुलपरंपरा

• पाठशाला विधि के गुण और दोष

गुण	दोष
1. चरित्र निर्माण में सहायक।	1. मंदबुद्धि बालकों का पिछड़ जाना।
2. मेधावी छात्रों का अधिक विकास होना।	2. मनोवैज्ञनिक शिक्षण का अभाव।
3. भारतीय संस्कृति व संस्कृत साहित्य के ज्ञान की प्राप्ति।	3. शिक्षण में अंतः क्रिया का अभाव।
4. शुरू में होने वाला मौखिक कार्य शिक्षण सिद्धांत के अनुरूप।	4. शारीरिक व सामाजिक विकास नहीं।
5. शुद्ध उच्चारण का विकास व उच्चारण दोष समाप्ति।	5. कठोर अनुशासन, नीरस शिक्षण में नीरसता।
6. कण्ठस्थीकरण का विकास।	6. मौखिक पक्ष का ही विकास लेखन का नहीं।
7. स्मरण शक्ति का विकास।	7. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को स्थान नहीं।

I. संस्कृतशिक्षणविधय:
- Sk Katariya
Sky Educare
www.skyeducare.com
YouTube
परंपरागत / प्राचीन
नवीन /आधुनिक
नवीनतम उपागम
1. पाठशाला विधि /
गुरुकुलपरंपरा
2. व्याकरणानुवाद विधि
भंडारकरविधि
इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें
Sky Educare
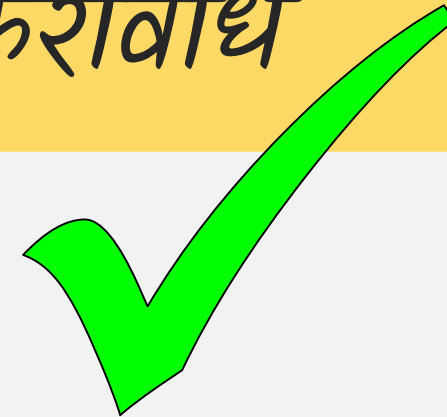
2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- यह विधि 1835 में **लार्ड मैकाले** द्वारा विकसित शिक्षा पद्धति का ही रूप है ।
- **डॉ रामकृष्ण गोपाल भंडारकर** द्वारा इस विधि का प्रारंभ किया गया इसलिए इसे **भंडारकर विधि भी कहते** हैं ।
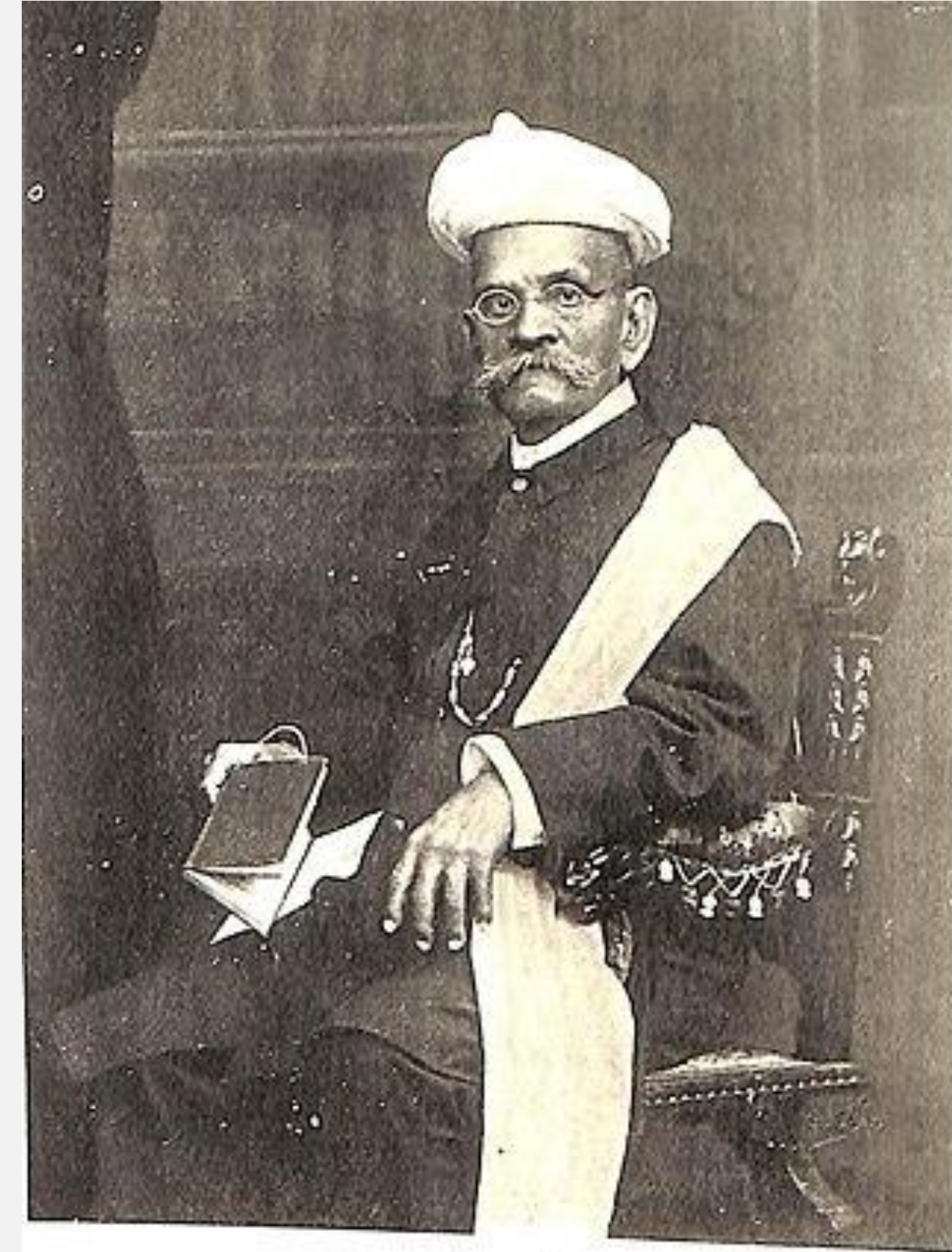
रामकृष्ण गोपाळ भांडारकर

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- इस विधि पर डॉ रामकृष्ण गोपाल भंडारकर ने दो पुस्तकें लिखी हैं ।

    । **मार्गोपदेशिका** 2 **संस्कृत मन्दिरान्त**

- इस विधि पर पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रभाव भी दिखाई देता है
- **संस्कृत से अंग्रेजी और अंग्रेजी से संस्कृत में अनुवाद करना।**
- इस विधि पर **वामन शिवरामाप्टे** ने भी एक पुस्तक लिखी है। जिसका नाम जिसका नाम "स्टूडेंट्स् गाइड टु संस्कृत कांपोज़ीशन" है।
- इस विधि के माध्यम से कंठस्थीकरण की अपेक्षा बोध शक्ति को जाग्रत करने और अभ्यास पर बल दिया जाता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- इस विधि के द्वारा सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण पाठ की उदाहरण सहित व्याख्या की जाती हैं, उस व्याकरण नियम का पर्याप्त अभ्यास कराया जाता हैं अभ्यास के लिए नवीन शब्द बताया जाते हैं
- उन वाक्यों के अभ्यास हेतु शब्दकोश से नए नए शब्दों का बोध कराया जाता हैं।

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- व्याकरण अनुवाद विधि के चार सोपान हैं -

1. व्याकरणपाठ (उदाहरण सहित व्याख्या व अभ्यास)
2. प्रथम भाषा संस्कृत से द्वितीय भाषा अंग्रेजी में अनुवाद
3. द्वितीय भाषा अंग्रेजी से प्रथम भाषा संस्कृत में अनुवाद
4. शब्दकोश का ज्ञान

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- **गुण** -

  ✓ इस विधि में स्थूल से सूक्ष्म की ओर, सरल से कठिन की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर मनोवैज्ञानिक नियमों पर ध्यान दिया जाता है।

  ✓ कठिन नियम हटाकर सरल वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है।

2. व्याकरणानुवाद विधि / भंडारकरविधि

- दोष -
  - ✓ उच्चारण, गति प्रवाह, साहित्य का अभाव।
  - ✓ भाषण व श्रवण का विकास नहीं होता हो पाता।
  - ✓ व्याकरण अनुवाद पर अधिक बल दिया जाता है।

1835 ई. के पश्चात लार्ड मैंकाले द्वारा दी गई शिक्षा पद्धति के बाद संस्कृत शिक्षण में जो विधियां अपनाई गई वह नवीन या आधुनिक शिक्षण विधियां हैं तथा इससे पहले कि सभी शिक्षण विधियां प्राचीन शिक्षण विधियां हैं।

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि या निर्बाधविधि या सुगमविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि या समन्वयविधि
7. मूल्यांकन विधि

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- समर्थक : डॉ. वेस्ट महोदय । प्रचलन : अंग्रेजों के आगमन के साथ ही हुआ था ।
- इसमें कक्षा के स्तरानुसार विषय वस्तु को वर्गीकृत किया जाता है।
- भाषा शिक्षण की लोकप्रिय विधि पाठ्यपुस्तक विधि है।
- इसमें **क्रमशः वर्णमाला, छोटे शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों** का ज्ञान करवाया जाता है। वाचन कौशल पर अधिक बल ।
- इस शैली से संस्कृत की पाठ्यपुस्तक भी तैयार की गई है।
- परीक्षा व अभ्यास कार्य का आधार पाठ्यपुस्तक ही है।
- **शिक्षण का केंद्र पाठ्यपुस्तक को माना गया है।**
- व्याकरण का ज्ञान प्रसंग आने पर ही दिया जायेगा।
- इन पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य कि इन्हें पढ़कर छात्र शिक्षक की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

- गुण एवं दोष

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- **गुण**

- नियमबद्ध एवं उद्देश्यनिष्ठ शिक्षण में सहायक है।
- यह छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि करने में सहायक है।
- स्वाध्याय प्रवृत्ति का विकास संभव। छात्रों हेतु पर्याप्त अभ्यास के अवसर।
- अध्यापक की अनुपस्थिति में भी अध्ययन संभव।
- समय, श्रम धन की बचत होती है।

- **दोष**

- शिक्षण केवल पुस्तक आधारित हो जाता है।
- व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धान्त की अवहेलना होनी है।
- सभी विधार्थी एक ही पाठ्य पुस्तक का अध्ययन करते है।
- पाठ्य-पुस्तक उद्धेश्य प्राप्ति का साधन होता है शिक्षक उसे ही साध्य मान लेते है।
- केवल सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जाता है, व्यावहारिक प्रयोगात्मक नहीं।

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- प्रत्यक्ष विधि (Direct method) **निर्बाधविधि / सुगमविधि / प्राकृतिक विधि** के नाम से भी जाना जाता है।
- भाषा शिक्षण की **श्रेष्ठ विधि।**
- इस विधि में प्रत्यक्ष से अर्थ "कार्य करके दिखाना" से है इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग अंग्रेजी भाषा में 1901 में फ्रांस में "गुईन" ने किया। (अंग्रेजीभाषाशिक्षण में)
- **पर्वतक : प्रो. वी. पी. वॉकील। समर्थक : जेसपर्सन गेटे।**
- **विरोधी : डॉ. रामकृष्ण गोपाल भंडारकर एवं वामन शिवराम आप्टे।**
- **भारत में :** सबसे पहले "अल्फिन स्टोन हाई स्कूल बम्बई" में प्रो.वी. पी. वॉकील संस्कृत शिक्षण में 1951 में प्रयुक्त किया था।
- यह विधि 'वाइलटर पैनफील्ड के "**Mother's Methods** " पर आधारित है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- इस विधि में बालक को बिना व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराएं भाषा सिखाई जाती है अर्थात भाषा के माध्यम से ही भाषा सिखाई जाती है।
- इस विधि में बालक की मातृभाषा बिना मध्यस्थ बनाएं अन्य भाषा सिखाई जाती है ।
- प्रत्यक्ष विधि में श्रव्य दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है प्राथमिक कक्षाओं हेतु यह विधि अत्यधिक उपयोगी है।
- ***यह विधि मौखिक अभ्यास पर अधिक जोर देती है। (प्रत्यक्ष विधि में मात्र भाषा का प्रयोग करना "मौखिक विधि / संवादविधि है")***
- काठिन्य निवारण के लिए : दृश्य श्रव्य साधनो का प्रयोग या पारस्परिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
- उद्देश्य : ***संस्कृतभाषाशिक्षण*** में संस्कृतमय वातावरण निर्माण करना।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- **गुण :**
- संस्कृत शब्दोच्चारण एवं अभिव्यक्ति का विकस संभव हो पाता है।
- संस्कृतभाषाशिक्षण में संस्कृतमय वातावरण निर्माण करना।
- भाषा शिक्षण की श्रेष्ठ विधि।

- **दोषः**
- व्याकरण ज्ञान का आभाव रहता है।
- इस विधि में अधिक से अधिक सुनने व बोलने पर बल दिया जाता है किंतु लेखन और वाचन की अवहेलना की जाती है।
- छात्रों को शब्दावली का बहुत ही सीमित ज्ञान हो पाता है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- हरबर्ट एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक थे उनके सिद्धांतों के आधार पर उनके शिष्यों ने इस **पंचपदी विधि** को प्रस्तुत किया।
- **5 पदों के द्वारा** शिक्षण कार्य करवाए जाने के कारण इस शिक्षण विधि को हरबर्ट की पंचपदी शिक्षण विधि के नाम से जानते हैं।
- संस्कृत शिक्षण में भी इस विधि को उपयोग में लाया जाता है ।
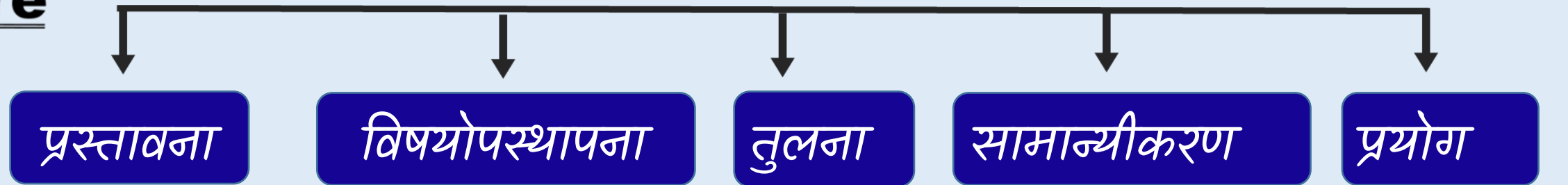
नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

- शिक्षाशास्त्री हरबर्ट ने शिक्षण हेतु **चार सोपानो** से युक्त एक शिक्षण प्रणाली तैयार की –
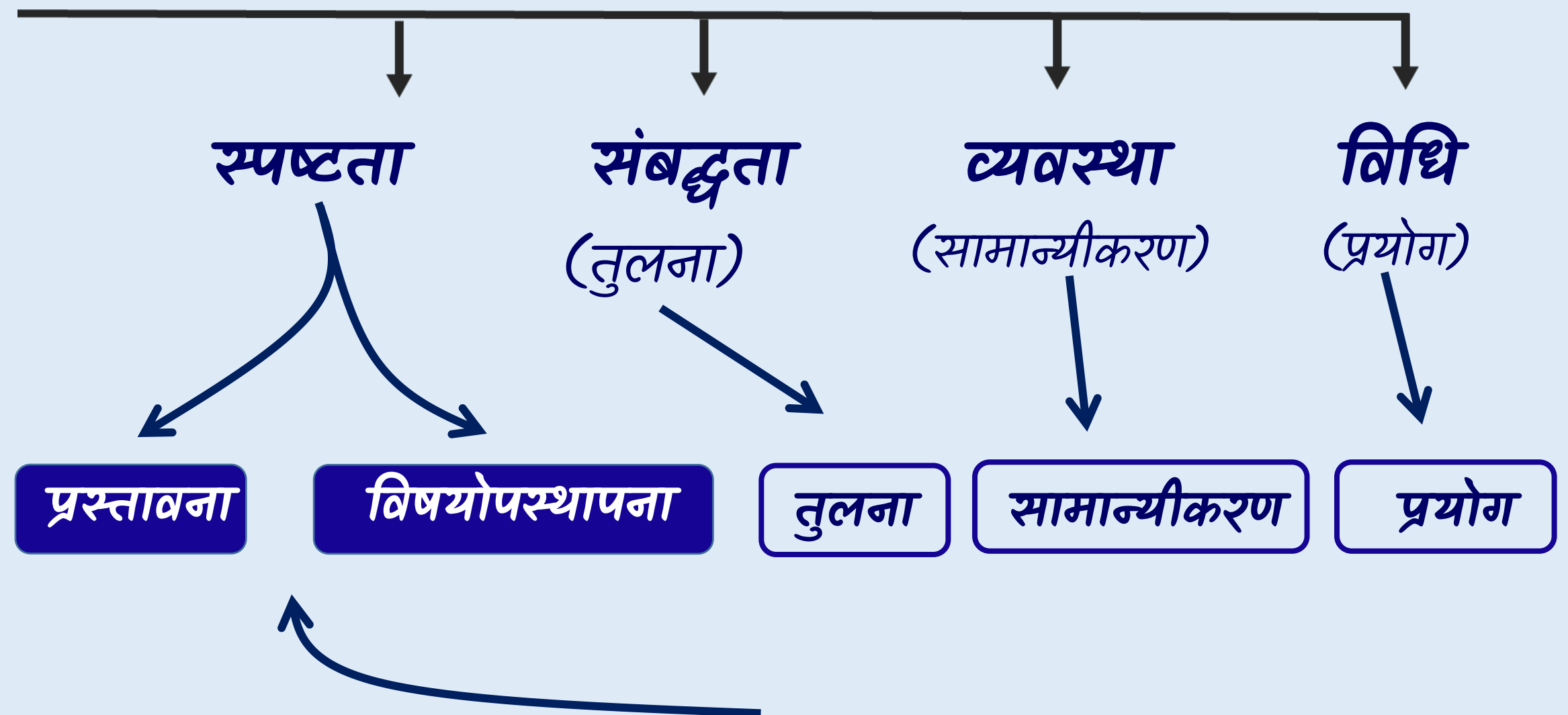
हरबर्ट के बाद उनके दो शिष्य **शिलर** एवं **रेन** ने प्रथमसोपान-**स्पष्टता** को दो भागों (**प्रस्तावना, विषयोपस्थापना**) में विभाजित कर दिया

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | **विषयोपस्थापना** | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- इस विधि में नवीन पाठ को प्रस्तुत करने से पहले, शिक्षक द्वारा छात्रों के पूर्व ज्ञान को जानने के लिए - प्रश्न, चित्र - मानचित्र, श्लोकाआदि द्वारा नवीन ज्ञान की ओर ले जाना प्रस्तावना है।
- पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए एवं साथ में छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करते हुए नवीन पाठ की प्रस्तावना के माध्यम से अध्यापक के द्वारा पाठ की उद्घोषणा की जाती है।
- शिक्षक चार पांच प्रश्नों के माध्यम से वार्तालाप के द्वारा छात्रों को तैयार करता है और उनके पूर्व ज्ञान को जानकर नवीन ज्ञान की ओर ले जाता है जिसमे अन्तिम प्रश्न समस्यात्मक होना आवश्यक है जिसके उतर स्वरूप शिक्षक नवीन पाठ प्रस्तुत करता है । (जिसे पाठ योजना में प्रस्तावनाकौशल कहते हैं)

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- Sk Katariya
Sky Educare
YouTube
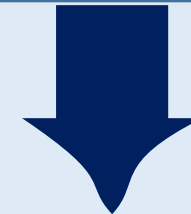
- मुख्य उद्देश्य : पाठ को पूर्ण रूप से छात्रों के सामने रखना है।
- इस सोपान में उद्देश्य कथन के साथ विषय का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। और इसके साथ ही नवीन पाठ का शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो जाता है।
- भावानुसार विषय वस्तु को दो - तीन भागों में विभक्त करके प्रस्तावना के बाद प्रस्तुत किया जाता है ।
- इसमें - आदर्श वाचन (शिक्षक द्वारा) अनुकरण वाचन (छात्रों द्वारा) के बाद विभिन्न विधियों से काठिन्य निवारण, अशुद्धि संसोधन आदि प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से किया जाता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | **विषयोपस्थापना** | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- शिक्षण के दौरान जिन जिन शब्दों और भावों का अर्थ समझने में कठिनाई होती है उन शब्दों के भावों को स्पष्ट करने के लिए विविध दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग करते हुए छात्रों के द्वारा अर्जित ज्ञान से वर्तमान पाठ की तुलना (अमूर्तीकरण) करते हुए विषयवस्तु को स्पष्ट किया जाता है।

- **मुख्य उद्देश्य** : विषयवस्तु को स्पष्ट करना।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधयः

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग

- मुख्य उद्देश्य : विषय वस्तु को सार रूप में स्पष्ट करना।
- पाठ की तुलना के बाद इसमें पढ़े गए पाठ के निष्कर्ष अथवा सार पर छात्र पहुंचने का प्रयत्न करते हैं। छात्र निष्कर्ष पर आते हैं।
- इसके अंतर्गत नियम निर्माण, सिद्धांत निर्माण, पुनरावृति प्रश्न, सामान्य भाव की कविता, बोध प्रश्न, विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न, आदि आते हैं
- इसका व्याकरण पाठ में विशेष महत्व है। व्याकरण में नियमीकरण या नियमितीकरण कहते हैं।
- गद्य और पद्य शिक्षण पाठ में में पाठ का सार अध्यापक द्वारा बताना तथा छात्रों से प्रश्नों द्वारा मुख्य भाव ज्ञात करना , गद्य पद्य में इसे अध्यापक कथन कहा जाता है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधिविधि
7. मूल्यांकन विधि

प्रस्तावना | विषयोपस्थापना | तुलना | सामान्यीकरण | प्रयोग
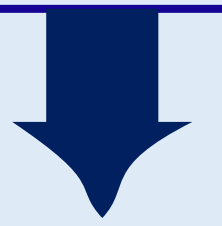
- प्रयोग का मुख्य उद्देश्य : ज्ञान को स्थाई करना है।
- इसमें अभ्यास कार्य करने के लिए गृह कार्य दिया जाता है।
- यह मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार का होता है
- इसके अंतर्गत कक्षा कार्य एवं गृह कार्य आते हैं
- नए ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए और छात्रों को अर्जित ज्ञान को उपयोग में लेने के योग्य बनाने के लिए इस सोपान को काम में लिया जाता है।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- "**पूर्णादंशं प्रति**" शिक्षण सूत्र पर आधारित होती है अथार्त यह विधि **पूर्ण से अंश की ओर** इस शिक्षण सूत्र पर आधारित है।
- इसमें शिक्षक पहले संपूर्ण पाठ की विषय वस्तु को एक साथ संक्षेप में प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात पाठ के विभिन्न अंशों का शिक्षण करता है।
- संस्कृत शिक्षण में विशेषतः व्याकरण एवं कथा करते समय इसका प्रयोग अधिक उपयोगी है।
- **लाभ** : एक साथ संक्षेप में विषय वस्तु प्रस्तुत करने से शिक्षण रुचिकर हो जाता है।
- छात्र सीखने के लिए अभी प्रेरित होते हैं।

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***वाक्यस्वरूप*** *या वाक्य की सरंचना पर बल देकर शिक्षण करवाया जाता है।*
- *वाक्य रचना के दौरान* ***व्याकरणात्मक*** *ज्ञान दिया जाता है साथ ही* ***शब्दकोष का ज्ञान*** *भी करवाया जाता है ।*
- *जैसे- कर्ता, कर्म, अव्यय, उपसर्ग, निपात आदि का ज्ञान करवाना।*
- *इस विधि का प्रयोग प्रत्यक्ष विधि को सफल बनाने के लिए होता है।*

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***संयुक्तविधि / समवायविधि/ समन्वयविधि/ समाहारविधि***
- *बोकिल की नवीनविधि, आप्टे की मनोवैज्ञानिकविधि, तथा ह् परिकर की विश्लेषण-संश्लेषणात्मक विधि का मिश्रण होने पर यह संयुक्त विधि समवाय विधि कहलाती है।*
- *दूसरी विधियों की उपेक्षा करने की बजाय समस्त विधियों के श्रेष्ठ गुणों को लेकर उनका संश्लेषण कर परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करना संयुक्त विधि है।*
- *समवाय विधि को समझने का ढंग निम्न प्रकार है –*
- *जैसे – अध्यापक गद्य का कोई पाठ पढ़ा रहा है और उसके बीच में व्याकरण का कोई बिन्दु आ गया तो अध्यापक वहीं पर उसे व्याकरण का ज्ञान सीखाएगा या अन्य इससे संबंधी कोई बात आ गई तो साथ ही चर्चा की जाती है।*

नवीन/आधुनिक शिक्षणविधय:

1. पाठ्यपुस्तकविधि
2. प्रत्यक्षविधि
3. हरबर्ट की पंचपदी
4. विश्लेषणविधि
5. संरचनाविधि
6. समवायविधि
7. मूल्यांकन विधि

- ***यह हरबर्ट की पंचपदी विधि का ही विकसित रूप है।***
- यह एक उद्देश्यनिष्ठ विधि है जो छात्र के स्थाई ज्ञान को परखती है।
- सबसे पहले पाठ योजना के समय पाठ का उद्देश्य निश्चित कर छात्र के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को देखा जाता है, साथ ही व्यवहार परिवर्तन हेतु आवश्यक क्रियाओं को समाहित किया जाता है।
- यह विधि शिक्षण के प्रत्येक सोपान के अंत में काम में ली जाती है।
- मूल्यांकन का अर्थ - भावात्मक रूप से निर्णय देना।
- मूल्यांकन प्रणाली के शिक्षण सूत्रों का क्रम –

उद्देश्य	व्यवहाररूप
पाठ्यबिंदु	शिक्षणकार्य
छात्रकार्य	मूल्यांकन

- यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि मूल्यांकन साथ-साथ चलता है।

संस्कृतशिक्षणस्य नवीनतमोपागमः

I. संस्कृतशिक्षणविधय:

परंपरागत / प्राचीन

नवीन /आधुनिक

नवीनतम उपागम

1. सूक्ष्म शिक्षण
2. आगमन उपागम
3. समस्या समाधान
4. प्रयोजन विधि
5. दल शिक्षण
6. पर्यवेक्षण अध्ययन विधि
7. कंप्यूटर पर आधारित शिक्षण प्रतिमान
8. अभिक्रमित अनुदेशन
9. सग्रंथन उपागम
10. निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **इसका विकास सबसे पहले एलन द्वारा 1963 ई. में किया गया।**
- **परिभाषाः** शिक्षण अभ्यास की व्यवस्था जिससे किसी निश्चित शिक्षण व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ नियंत्रित परिस्थितियों में शिक्षण का अभ्यास संभव हो पाता है।

- कक्षा के आकार सीमित होता है । समय सीमा कम करना।
- पाठ के आकार को कम करना। शिक्षण कौशल को कम करना।

- **उद्देश्य** : एक टीचर प्रशिक्षु को सीखने और नए शिक्षण कौशल को नियंत्रित परिस्थितियों में आत्मसात् करने योग्य बनाना। एक टीचर प्रशिक्षु को शिक्षण में विश्वास करने योग्य बनाना।

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **समय सीमा : सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय नमूने के अनुसार जो कि NCERT द्वारा विकसित किया गया है वो इस प्रकार है:**

- पढ़ाना: 6 मिनट
- फ़ीडबैक: 6 मिनट
- पुनर्योजना: 12 मिनट
- पुनर्शिक्षण: 6 मिनट
- पुनर्फ़ीडबैक: 6 मिनट
- कुल: 36 मिनट
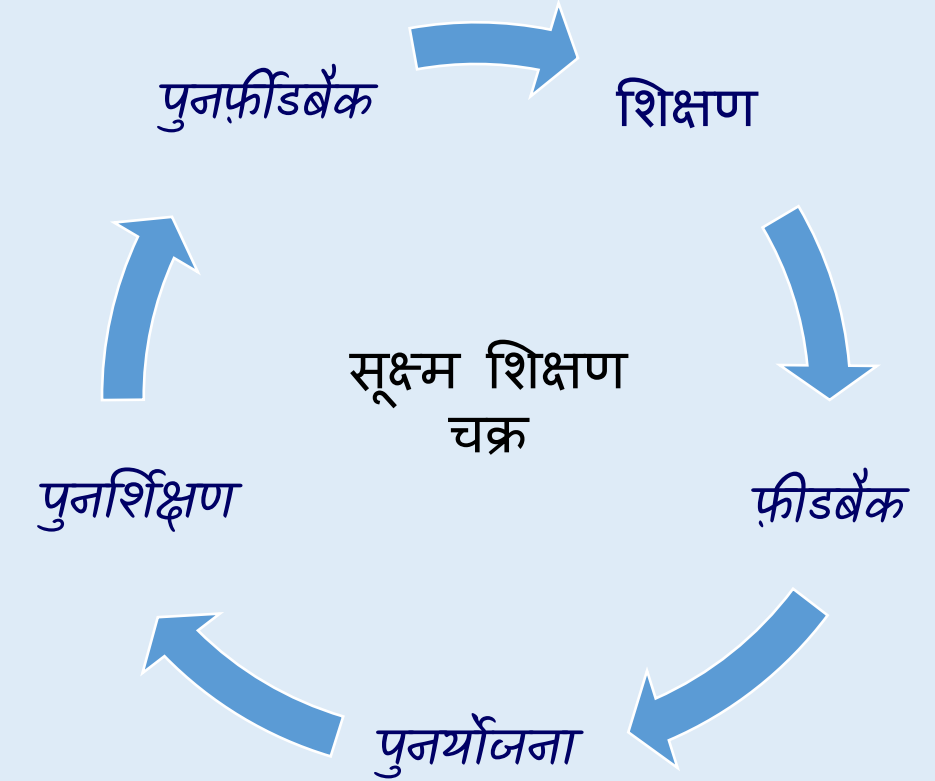
- **सूक्ष्म शिक्षण का चक्र के तहत यह चलता है ।**

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन कर नियम निकाले जाते हैं तथा ज्ञात तथ्यों के आधार पर उचित सूझ बुझ से निर्णय लिया जाता है । इसमें शिक्षक छात्रों को अध्ययनप्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, एवं विशिष्ट से सामान्य की ओर करवाते हैं ।

नवीनतमोपागम:

Sky Educare www.skyeducare.com
Sky Educare www.skyeducare.com

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- **समस्या समाधान विधि :** इसमें सर्वप्रथम विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतीपूर्ण परिस्थिति पैदा की जाती है ताकि विद्यार्थियों उस समस्या के समाधान हेतु विविध प्रयास करते हुए , शिक्षक के निर्देशन में उसका समाधान करता है।

- **पर्वतक :** थॉमस एवं रिस्क।
- उच्च शिक्षण हेतू उपयोगी है।

नवीनतमोपागम:

Sky Educare www.skyeducare.com
Sky Educare www.skyeducare.com

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण
  एवं उपचारात्मक क्षण

- **सर्वप्रथम यह विचार जॉन डी.वी.** ने दिया।
- इस विधि के प्रवर्तक जॉन डी.वी. के शिष्य 'किल पेट्रिक' मने गए हैं।
- इस विधि में बालक को स्वयं अपनी रुचि के अनुसार विषय वस्तु व क्रिया में सामंजस्य स्थापित करते हुए सीखने की क्रिया करने का अवसर दिया जाता है।
- ये पद्धतियाँ विद्यार्थी को भयमुक्त वातावरण से निकालकर स्वतंत्रता एवं
- सुगमता से कार्य करने को प्रेरित करती हैं।
- **लाभ** : इस से अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास के साथ साथ अन्वेषण योग्यता, निर्णय शक्ति, मूल्यांकन क्षमता, सृजनात्मक, रचनात्मक प्रवृति आदि कौशलों का विकास होता है।

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- ***समूह शिक्षण / सहकारिता शिक्षण / टोली शिक्षण।***
- *दल शिक्षण विधि, यह एक नवाचार विधि है।'दल' शब्द का अर्थ होता है समूह अर्थात् जब किसी कक्षा-कक्ष में विशेषज्ञ शिक्षक समूह द्वारा अध्यापन कार्य किया जाता है।*
- ***इसके ३ सोपान हैं -***
- ***१. योजना बनाना , २. व्यवस्था करना , ३. मूल्याङ्कन करना।***

नवीनतमोपागम:

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- **पर्यवेक्षण अध्ययनविधि**
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में विद्यार्थी अपने आवंटित कार्य को शिक्षक की देखरेख में स्वतंत्र रुप से करते हैं। इस के अनुसार छात्रों को अध्ययन सम्बन्धी कुछ कार्य बता दिये जाते है और वे अपने अपने स्थान पर बैठे बैठे बताए हुए कार्य को करते रहते है और शिक्षक वहीं उनके कार्य का निरीक्षण व निर्देशन करता है।
- 1. निर्देशित स्वाध्याय प्रणाली में छात्र और शिक्षक दोनो क्रियाशील रहते है।
- 2. इस प्रणाली में छात्रों की व्यक्तिगत क्रियाओं, प्रयासों को अधिक महत्व दिया जाता है।
- 3. यह पद्धति छात्रों की स्वाध्याय का अधिक अवसर दिया जाता है, जिससे स्वाध्याय की प्रवृति विकसित होती है।
- 4. उसमें शिक्षक की मुख्य भूमिका छात्रों की सहायता करना एवं उन्हें अध्ययन के लिये निर्देशन देना होता है।
- प्रत्येक छात्र को अपनी क्षमता तथा योग्यता के अनुसार करने का अवसर प्राप्त होता है।
- इस पद्धति के अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्रों के मध्य मधुर सम्बन्ध स्थापित होते है।

- Sk Katariya

नवीनतमोपागमः

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- कम्प्यूटर आधारित शिक्षण विधि : कंप्यूटर, सूचना और प्रसार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सीखने और प्रशिक्षण की विधि है।
- कंप्यूटर का इस्तेमाल करके विषय वस्तु (दृश्य - श्रव्य सामग्री) के माध्यम छात्रों तक पहुंचाया जाता है।
- उनका उपयोग करके विद्यार्थियों के लिए तीव्र गति से, परिशुद्धता के साथ काम करना संभव हो जायेगा। उनके लिए पढ़ाई करना आसान हो जायेगा। कंप्यूटर उनको जल्दी विद्या ग्रहण करने और कार्य कुशल बनने में सहायता प्रदान करेगा।
- छोटी उम्र में सीखना आसान होता है। बचपन में ही कंप्यूटर सहायक अधिगम का प्रयोग करने से वे अधिक सक्षम बनेंगे। उन्हें बचपन से तकनीकी चीजों को इस्तेमाल करने का अभ्यास हो जायेगा। वे बड़े होकर इसमें निपुण हो जायेंगे।

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- सग्रंथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और छात्रों के मध्य अंतः क्रिया महत्वपूर्ण होती है इस सिद्धांत पर आधारित अभिक्रमित उपागम होता है।
- स्मिथ व मूरे (Smith and moore) के शब्दों में, अभिक्रमित अनुदेशन किसी अधिगम सामग्री को क्रमिक पदों की श्रृंखला में व्यवस्थित करने वाली एक क्रिया है, जिसके द्वारा छात्रों को उनकी परिचित पृष्ठभूमि से एक नवीन तथा जटिल प्रत्ययों, सिद्धांतों तथा अवबोधों की ओर ले जाया जाता है।"
- छात्र प्रतिपुष्टि व पुनर्बलन द्वारा क्रमबद्ध तरीके से सीखता है जिसके दो भेद हैं -रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन एवं दूसरा है - शाखिये अभिक्रमित अनुदेशन।

- Sk Katariya

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- संग्रथन उपागम
- निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक क्षण

- इस विधि में छोटे-छोटे वाक्यों के आधार पर विषय प्रस्तुतीकरण किया जाता है। सरलता से कठिनता की ओर बढ़ने के लिए यह बनाई गई विधि है।
- इसे आंग्ल भाषा में स्ट्रक्चरल अप्रोच कहते हैं।

नवीनतमोपागमः

- सूक्ष्म शिक्षण
- आगमन उपागम
- समस्या समाधान
- प्रयोजन विधि
- दल शिक्षण
- पर्यवेक्षण अध्ययनविधि
- कंप्यूटर आधारित
- अभिक्रमित अनुदेशन
- संग्रथन उपागम
- निदानात्मक एवं उपचारात्मकशिक्षण

- शिक्षक छात्रों की शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं का पता लगाकर उन्हें दूर करता है।
- समस्या के कारणों का पता लगाना 'निदान' कहलाता है।
- समस्या के कारणों का पता लगाकर समाधान करना दूर करना 'उपचार' कहलाता है।